DATE
PAGE NO

ऑडियो, विडियो रिकॉर्डिंग और कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर न:- 10 दिनांक 06/06/2021

ZOOM 0018.WAV स्थान बड़नावा चारणान्

कलाकार का नाम - (निहालदीन) गायन / वादन

ट्रैक समयावधि - - 46.27

पता :- बड़नावा चारणान् तेह० पचपदरा जिला बाड़मेर

सहायक कलाकार

1

2

विडियो रिकॉर्डिंग का समय

विषय - कथा - आसा डाबी

विशेष - विवरण

विशेष - विवरण - यह पौराणिक कथा आसा डाबी के जीवन पर आधारित है। आसा डाबी एक ठाकर था। उसके पीछे पुरा गांव चलता था। तो यह किसी दरबार के यहां नौकरी पर था। और इनका पुरा समूह भी इनके साथ में था। एक दिन इनके पास पत्र आता है अपने घर से और उसमें आसा जी को शादी के लिए घर बुलाने के बारे में लिखा हुआ था आसोजी दरबार के पास जाता है और छुट्टी की अर्जी देता है।

दरबार बोलता है कि आप अकेले जा सकते हो और शादी के 4-5 दिन बाद वापस आ जाना। तो आसोजी मन में विचार करता है अकेला जाने से क्या फायदा- बेली सगन्ती अगर साथ में नहीं है तो शादी में कुछ खास नहीं है; जाऊँगा तो पूरे समूह को साथ लेकर ही जाऊंगा नहीं तो जाऊंगा ही नहीं। आसो जी फिर दरबार के पास जाता है और हाथ जोड़कर विनति करता है और केहता है आज से ठीक 15 दिन बाद हम पूरे लोग वापस काम पर आ जायेंगे

आप हमें आज्ञा दीजिए - दरबार उसे छुट्टी दे देता है और वह अपने - अपने घोड़ा पर सवार हो कर वहां से रवाना हो जाते है आसोजी भी अपने पावले पर सवार होकर निकल जाते है एक दो दिन मे अपने गांव पहुंच जाते है। आगे आसोजी की शादी की तैयारियां चल रही है। और आसो जी को भी तैयारियों मे रवाना शामिल किया जाता है। सुबह आसो जी की बारात पहुँच जाती है बादली जी के घर शाम होने तक दोनों ने फेरे लिए और आसो जी बादली जी को अपने घर लेकर आ जाता है।

अब दोनो विवाह के पवित्र बन्धन में बंध चुके थे, दोनों एक-दूसरे को धीरे-धीरे समझने लगे और धीरे धीरे समय भी बीत रहा था, आसो जी को नौकरी पर भी वापस जाना था महीना बीत गया दो महीने बीत गये ऐसे करते - करते 12 महीने बीत गये। गांव वाले आसोजी से कहने लगे, अपन 15 दिन की छुट्टी पर आये थे 12 महीने हो गये.

खाने का सामान खत्म हो गया है अब अगर हम नौकरी पर वापस नहीं गये तो भूखे मर जायेंगे आप शाम को तैयार होते हो और सुबह होने पर मना कर देते हो आखिर बात क्या है तो आसो जी केहते है मै शाम को जब बादली जी के पास जाता हूँ तो वह मुझे मदीरा के दो प्याले देती है मै तो सुबह होने तक नहीं उठ पाता हूँ।

इतने मे नई जी बोलते है ठाकर साहब एक बात मेरी मानो जो मैं केहता हूँ आप बादली जी से केहना आज रात जब बादली जी आपके पास मदीरा का प्याला लेकर आये उस समय आप उनसे केहना की बादली जी 12 महीने हो गये है आप ही मुझे पिलाती है आज आप मेरे हाथ से भी तो पिये नहीं तो अपने प्यार का क्या अर्थ। नई जी बाजार से बहुत तेज वाली मदिरा ला कर दरबार को देता है।

और केहता है ये आप बादली जी को पिला देना। फिर हम आज रात ही रवाना हो जायेगें। रात को आसो जी बादली जी को वह मदिरा पिला देता है। और वहां से रवाना हो जाता है तो गांव वाले तैयार थे वह भी रवाना हो जाते है। सुबह होती है तो बादली जी को पता चलता है कि आसोजी उनके पास नहीं है। इसके बारे में वह दासियों से पूछती है। तो वह केहती है आप के पास थे। हमारे पास तो थे नही हमें क्या पता कहां गये।

बादली जी भी पीछे रवाना हो जाती है कुछ समय बाद मे वहा पहुँच जाती है। और आसोजी से झगड़ने लगती है। आसो जी बादली जी से केहता है ये प्रजा भूखे मर जायेगी अगर मैं नहीं गया तो आज तु मुझे जाने दे आज मत रोक तो बादली जी केहती है कि वापस कब आओगे। आसो जी सावन की तीज पर वापस आने का वादा करता है और बादलीजी बोलती है अगर सावन की तीज पर वापस नहीं आये तो मैं सती हो जाऊंगी।

बादली जी वहां से घर वापस आ जाती है और आसोजी नोकरी पर चले जाते है वहां जाकर ये अपना काम सुरू करते है। वहां आसो जी की मुलाकात अपने मासीअत भाई रिड़मल से होती है। वहां ये बहुत ही ठाठ से काम करने लगे, कुछ समय बाद दरबार के महल में सावन की तीज की तैयारिया होने लगी तो आसो जी ने रिड़मल को बताया मुझे घर जाना है।

रिड़मल ने आसो जी के घोड़े को सेठ के हाथों बेच दिया और कहा इसे अपने घर जा कर बान्ध दो अब सावन की तीज आने वाली थी। आसो जी को भी घर जाना था। ये राइको के पास गया वहां से एक टोडी लाया. उस टोडी की एक आदत थी कि बरसात के पानी में लिटा करती थी। पानी सूखने पर वह फिर से चलने लगती थी।

Anand
DATE :
PAGE NO. :

आसो जी लेडी पर सवार होकर रास्ते मे बरसात होने लगती है किसी गांव में पहुँचने पर पानी इकठा हुआ देख लेडी वहां बैठ जाती है और आसो जी भी पास के महल की छत के नीचे जाकर खड़े हो जाते है। ये महल उसी सेठ का था जिसके पास आसो जी का घोड़ा था। रात को जब बारिश में भीग रहा था तब सेठानी जी ने उसे देख लिया और पुछा कौन हो तुम और इतनी रात को यहां क्या कर रहे हो?

तो वह केहता है मेरा नाम आसा-डाबी है और बादली जी मेरी पत्नी है। जब बादली का नाम सेठानी जी सुनती है तो वह पेहचान लेती है। और केहती है जीजाजी आपको क्या चाहिए? आसो जी बताते है अगर मै कल सुबह तक घर नहीं पहुंचा तो बादली जी चलू कर राख हो जायेगी। मुझे आपका घोड़ा चाहिए सेठानी जी आसो जी को घोड़ा दे देती है, आसोंजी घोड़े पर बैठते ही घोड़े को पेहचान लेते है।

उधर बादली जी सती होने की पुरी तैयारियां कर चुकी थी। तो ढोलीजी ढोल बजाते है और बादलीजी की आखरी यात्रा शुरू होती है। बादली जी काफी देर तक मुर्जा करती है पर आसो जी का कहीं कोई अता-पता नहीं था है। और ढोली जी बादली जी को एक अन्तिम मुर्जे के लिए केहता है। बादली जी मुर्जा करती है तो ऐसा करती है कि इतना अच्छा इससे पहले किसी ने नहीं किया।

वह नाचती-नाचती आग की तरफ बढ़ रही थी, आसों जी अब तक वो नही पहुंच पाये थे, बादली जी ने जैसे ही अपना पहला कदम आग मे रखने का प्रयास किया उस समय आसों जी पावठे के साथ वहां पहुंच जाते है और बादली जी को बचाने में सफल हो जाते है। और अपने घर जाकर सावन की तीज मनाते है, कहानी के अन्त में दोनो को एक साथ जीवन बीताना बताया गया है।